International Journal of Engineering, Management, Humanities and Social Sciences Paradigms (IJEMHS)
Volume 35, Issue 02 and Publication Date: 24th April, 2023
An Indexed, Referred and Peer Reviewed Journal
ISSN (Online): 2347-601X
www.ijemhs.com

भारत में दुग्ध उद्योग की वर्तमान स्थिति : एक अध्ययन

नवीता कुमारी

शोध छात्रा, अर्थशास्त्र विभाग, बी.एन.एम.यू, मधेपुरा ,बिहार

सार

देश में दूध का सर्वाधिक उत्पादन होता है। दूध के लिए भारत आज से नहीं सदियों से जाना जा रहा है। भगवान कृष्ण के जमाने से देश में दूध की गंगा बहा करती थी। आज भी इस उपलब्धि को भारत कायम रखे हुए हैं। विश्व स्तर पर देखा जाए तो 22 प्रतिशत दूध का उत्पादन अकेले भारत करता है। इसमें देश के करीब 10 राज्य महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वही दूध उत्पादन में अमेरिका दूसरे स्थान पर है तो तीसरे स्थान पर पाकिस्तान का नाम आता है।

विस्तार

पूर्व काल में तो दूध का उत्पादन और भी ज्यादा था। इस बात का अंदाजा हम ऐसे लगा सकते हैं कि भगवान कृष्ण के यहां कई लाख गायों की सेवा हुआ करती थी। तीज त्योहारों पर देसी घी से तरह–तरह के पकवान बनाए जाते थे। दो लोग अगर काफी दिनों बाद मुलाकात कर रहे हैं तो हालचाल के बीच पूछा जाता था कि घर में दूध गोरस हो रहा है या नहीं।

देखा गया है कि पूर्व काल में दूध का सर्वाधिक उत्पादन भारत में हुआ करता था। गोपालन गांव में एक परंपरा के रूप में विकसित थी। मान्यता के अनुसार कहा जाता था कि जिस घर में गोपालन नहीं होता वह अपवित्र है। धीरे–धीरे यह प्रथा समाप्त हुई। अब डेयरी फार्म के मत्थे और विदेशी नस्ल की गायों के भरोसे दूध का भरपूर उत्पादन किया जा रहा है।

वेत क्रांति के बाद हुआ बदलाव देश में दूध उत्पादन काफी उतार–चढ़ाव से गुजरा है। वर्तमान परिस्थितियों को देखें तो पता चलता है वर्ष 1970 के दशक में भारत में हुई वेत क्रांति की सफलता का असर आज भी दिखाई देता है। वेत क्रांति की वजह से एक बार दुग्ध उत्पादन को बल मिल रहा है।

दुग्ध उत्पादन के मामले में देश के 10 राज्यों की अहम भूमिका है। जिसमें उत्तर प्रदेश और राजस्थान पहले स्थान पर है। जानकारी के अनुसार वर्ष 2000 से 2020 तक दूध उत्पादन में उत्तर प्रदेश पहले स्थान पर रहा है। उत्तर प्रदेश में वर्ष 2020 में 31834 टन दूध का उत्पादन हुआ। वहीं दूसरे स्थान पर राजस्थान का नाम आता है यहां 25573 टन दूध का उत्पादन रहा। तीसरे स्थान पर मध्य प्रदेश जहां 17109 टन हुआ। चौथे स्थान में गुजरात जहां 15, 292 टन दूध का उत्पादन हुआ। इसी तरह है 15, 263 टन उत्पादन के साथ आंध्र प्रदेश पांचवें स्थान पर, 13, 348 टन दूध का उत्पादन कर पंजाब छठवां स्थान पर। सातवें स्थान पर महाराष्ट्र जहां 12,024 टन दूध का उत्पादन हुआ। आठवें स्थान पर हरियाणा जहां 11, 735 टन, नौवा स्थान पर बिहार 10,480 टन तथा दसवे स्थान पर कर्नाटक जहां 9,031 टन दूध का उत्पादन हुआ। इन्हीं प्रदेशों की वजह से देश दूध उत्पादन के मामले में पहले स्थान पर रहा।

20 वीं पशुधन गणना के महत्वपूर्ण निष्कर्ष निम्नलिखित हैं :

देश में कुल पशुधन आबादी 535.78 मिलियन है जो पशुधन गणना–2012 की तुलना में 4.6 प्रतिशत अधिक है।

कुल गोजातीय आबादी (मवेशी, भैंस, मिथुन एवं याक) वर्ष 2019 में 302.79 मिलियन आंकी गई जो पिछली गणना की तुलना में लगभग 1 प्रतिशत अधिक है।

देश में मवेशी की कुल संख्या वर्ष 2019 में 192.49 मिलियन है जो पिछली गणना की तुलना में 0.8 प्रतिशत ज्यादा है।

मादा मवेशी (गायों की कुल संख्या) 145.12 मिलियन आंकी गई है जो पिछली गणना (2012) की तुलना में 18.0 प्रतिशत अधिक है।

विदेशी/संकर नस्ल और स्वदेशी/अवर्गीय मवेशी की कुल संख्या देश में क्रमशः 50.42 मिलियन और 142.11 मिलियन है।

स्वदेशी/अवर्गीय मादा मवेशी की कुल संख्या वर्ष 2019 में पिछली गणना की तुलना में 10 प्रतिशत बढ़ गई है।

विदेशी/संकर नस्ल वाली मवेशी की कुल संख्या वर्ष 2019 में पिछली गणना की तुलना में 26.9 प्रतिशत बढ़ गई है।

स्वदेशी/अवर्गीय मवेशी की कुल संख्या पिछली गणना की तुलना में

6 प्रतिशत कम हो गई है। हालांकि, 2012–2019 के दौरान स्वदेशी/अवर्गीय मवेशी की कुल संख्या में कमी की गति 2007–12 के लगभग 9 प्रतिशत की तुलना में अपेक्षाकृत काफी कम है।

देश में भैंसों की कुल संख्या 109.85 मिलियन है जो पिछली गणना की तुलना में लगभग 1.0 प्रतिशत अधिक है।

गायों और भैंसों में कुल दुधारू पशुओं की संख्या 125.34 मिलियन है जो पिछली गणना की तुलना में 6.0 प्रतिशत अधिक है।

देश में भेड़ की कुल संख्या वर्ष 2019 में 74.26 मिलियन है जो पिछली गणना की तुलना में 14.1 प्रतिशत ज्यादा है।

देश में बकरी की कुल संख्या वर्ष 2019 में 148.88 मिलियन है जो पिछली गणना की तुलना में 10.1 प्रतिशत अधिक है।

वर्तमान गणना में देश में सुअर की कुल संख्या 9.06 मिलियन आंकी गई है जो पिछली गणना की तुलना में 12.03 प्रतिशत कम है।

मिथुन, याक, घोड़े, टट्टू, खच्चर, गधे, ऊंट सहित अन्य पशुधन आपस में मिलकर कुल पशुधन में लगभग 0.23 प्रतिशत का योगदान करते हैं और उनकी कुल संख्या 1.24 मिलियन है।

देश में कुल पोल्ट्री संख्या वर्ष 2019 में 851.81 मिलियन आंकी गई है जो 16.8 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है।

देश में घरों के आंगन में पोल्ट्री की कुल संख्या 317.07 मिलियन आंकी गई है जो पिछली गणना की तुलना में लगभग 46 प्रतिशत ज्यादा है।

देश में वाणिज्यिक पोल्ट्री की कुल संख्या 534.74 मिलियन है जो पिछली गणना की तुलना में 4.5 प्रतिशत अधिक है।

देश में पशुधन गणना वर्ष 1919–20 से ही समय–समय पर की जाती रही है। पशुधन गणना में सभी पालतू जानवरों और उनकी संख्या को कवर किया जाता है। अब तक राज्य सरकारों और केंद्र शासित प्रदेशों के प्रशासन की भागीदारी से इस तरह की 19 गणनाएं आयोजित की गई हैं। 20वीं पशुधन गणना सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की भागीदारी से आयोजित की गई। यह गणना ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में की गई। पशुओं (मवेशी, भैंस, मिथुन, याक, भेड़, बकरी, सुअर, घोड़ा, टट्टू, खच्चर, गधा ऊंट, कुत्ता, खरगोश और हाथी) के विभिन्न नस्लों और घरों, घरेलू उद्यमों/गैर–घरेलू उद्यमों और संस्थानों में मौजूद पोल्ट्री पक्षियों (मुर्गी, बतख, एमु, टर्की, बटेर और अन्य पोल्ट्री पक्षियों) की गणना संबंधित स्थलों पर ही की गई है।

20वीं पशुधन गणना के तहत टैबलेट कंप्यूटरों के जरिये डेटा संग्रह पर विशेष बल दिया गया है। 20वीं पशुधन गणना को निश्चित तौर पर एक अनूठा प्रयास इसलिए माना जाना चाहिए क्योंकि पहली बार संबंधित क्षेत्र से ऑनलाइन संप्रेषण के जरिये घरेलू स्तर के आंकड़ों के डिजिटलीकरण के लिए इस तरह की बड़ी पहल की गई है। राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एनआईसी) ने एक मोबाइल एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर विकसित किया है और इसका उपयोग डेटा संग्रह के साथ–साथ संबंधित क्षेत्र से एनआईसी के सर्वर पर डेटा के ऑनलाइन संप्रेषण के लिए किया गया। चूंकि भारत एक ऐसा विशाल देश है जहां पशुधन की संख्या भी विशाल है, इसलिए विशेषकर नस्लों और उनकी उम्र–संरचना के साथ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर डेटा संग्रह करना वास्तव में एक बड़ी चुनौती है। इन चुनौतियों से पार पाते हुए 20वीं पशुधन गणना में 27 करोड़ से भी अधिक घरेलू एवं गैर–घरेलू मवेशी के आंकड़ों का संग्रह किया गया है, ताकि देश में पशुधन और पोल्ट्री की कुल संख्या का सटीक आकलन किया जा सके।

गणना से जुड़ी इस समूची प्रक्रिया में राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों की सरकारों ने 80,000 से भी अधिक ऐसे क्षेत्रीय कर्मचारियों की सेवाएं लीं जो मुख्यतः पशु चिकित्सक और पैरा–पशु चिकित्सक हैं, ताकि 20वीं पशुधन गणना का संचालन सुगमतापूर्वक किया जा सके। इस गणना का एक महत्वपूर्ण घटक प्रशिक्षण था क्योंकि पहली बार क्षेत्रीय कर्मचारियों (फील्ड स्टाफ) के लिए टैबलेट कंप्यूटर का संचालन अनिवार्य किया गया, ताकि इतने बड़े पैमाने पर गणना कार्य सुव्यवस्थित रूप से हो सके। विभिन्न स्तरों पर प्रशिक्षण देने का काम पूरा किया गया जिसकी शुरुआत दिल्ली में आयोजित 'प्रशिक्षकों के लिए अखिल भारतीय प्रशिक्षण कार्यशाला' के साथ हुई। बाद में राज्य और जिला स्तर पर भी प्रशिक्षण देने का काम पूरा

किया गया। प्रशिक्षण देने के अलावा प्रशिक्षण मैनुअल, ट्यूटोरियल वीडियो, ऑनलाइन ई–लर्निंग कक्षाओं इत्यादि की भी व्यवस्था की गई।

वर्ल्ड डेयरी समिट 2022 *(World Dairy Summit 2022)* का शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी (*PM Narendra Modi*) ने करते हुए कहा कि दुनिया भर में डेयरी सेक्टर 2 फीसदी की रफ्तार से बढ़ रहा है, जबकि भारत में यह सेक्टर 6 प्रतिशत की रफ्तार से बढ़ रहा है. उन्होंने इस सेक्टर में महिलाओं की भूमिका के बारे में की जानकारी देते हुए कहा कि डेयरी सेक्टर में काम करने वाले कुल वर्क फोर्स में74 फीसद महिलाएं हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है और इसमें कई क्षेत्रों का बड़ा योगदान है. कृषि क्षेत्र भी इन में से एक है. इस अर्थव्यस्था में दुग्ध उत्पादों का बड़ा योगदान है. डेयरी का देश की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में 5: का योगदान करने वाली सबसे बड़ी कृषि वस्तु मानी जाती है. फिलहाल अगर आंकड़ों के हिसाब से देखा जाए तो भारत दुग्ध उत्पादन में पूरे विश्व में पहले स्थान पर है और वैश्विक दुग्ध उत्पादन में भारत का योगदान 23 फीसदी है. डेयरी से देश में 8 करोड़ से अधिक किसानों को इस क्षेत्र में प्रत्यक्ष रोजगार भी मिलता है. देश में दुग्ध उत्पादन लगभग 6.2 : की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ कर 2020–21 में 209.96 मिलियन टन तक पहुंच गया है. जब कि यह 2014–15 में केवल 146.31 मिलियन टन था.1

चित्र 1: भारत में दूध उत्पादन की प्रवृत्ति (मिलियन टन)

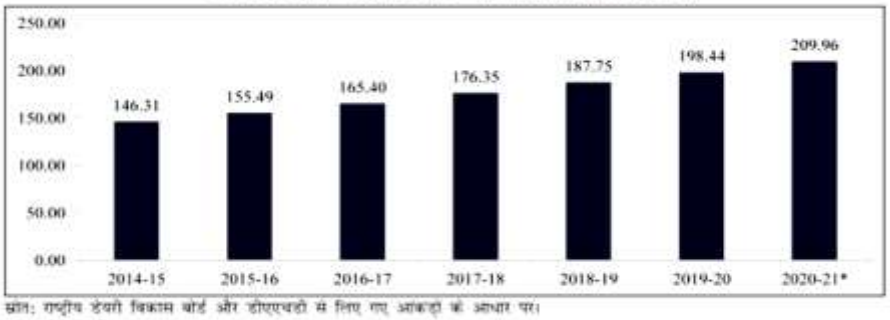

स्रोत: राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड और डीएएचडी से लिए गए आंकड़ों के आधार पर।
*डेटा अनंतिम है

देश के आर्थिक सर्वेक्षण के आंकड़ों में देखा जाय तो देश में प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता भी बढ़ी है. 2014 में देखा जाए तो प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता केवल 319 ग्राम थी, जो2020–21 में बढ़कर 427 ग्राम प्रतिदिन तक पहुंच गयी है.2

चित्र 2 : प्रति व्यक्ति दुग्ध उपलब्धता (ग्राम/दिन), मांस (किलो प्रति वर्ष) और अंडे (प्रति वर्ष संख्या)

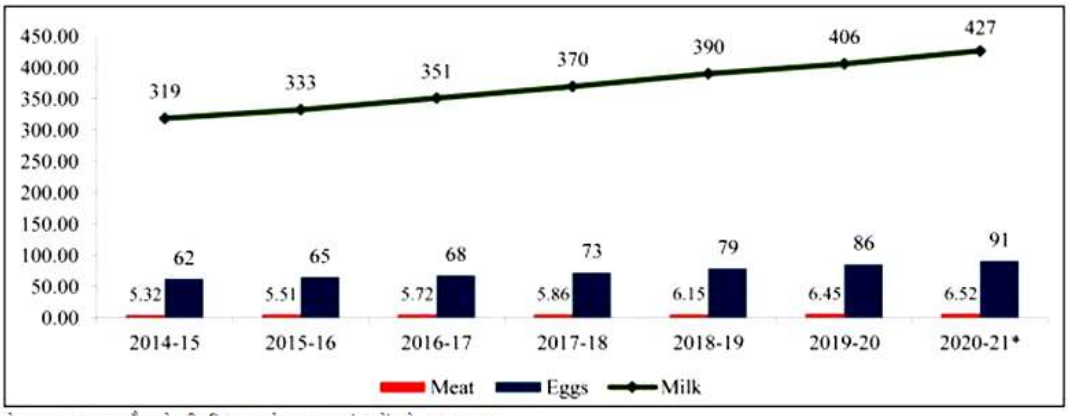

स्रोत: पशुपालन और डेयरी विभाग से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर

डेयरी को ऑपरेटिव बनाने के लिए तैयार किया गया. यह कार्यक्रम कई चरणों में लागू हुआ और देश भर में फैला. 'आणंद पैटर्न' पूरी तरह से एक सहकारी संरचना थी, जिस में गांव– स्तरीय डेयरी सहकारी समितियां शामिल थीं, जिस के मध्यम से जिला–स्तरीय यूनियनों को बढ़ावा मिला, और फिर राज्य–स्तरीय मार्केटिंग फेडरेशन बनेगए।1970 में शुरू किए गए ऑपरेशन फ्लड ने भारत को सब से बड़े दूध उत्पादकों में से एक बनाते हुए आज सर्वोच्च स्थान पर पहुंचा दिया है.[3]

उपसंहार

भारत को दूध निर्यातक देश बनाना भारत को भले ही सर्वाधिक दूध पैदा करने वाले देश का दर्जा मिल गया है, लेकिन अभी भी प्रमुख दूध निर्यातक देशों की श्रेणी में शामिल होना हमारे लिए बड़ी चुनौती है. हमारे देश में दूध का जो भी उत्पादन होता है, उस का अधिकांश स्सा घरेलू मांगों को पूरा करने में खर्च हो जाता है. हमारी सरकारों को इस के बारे में सोचना व निर्यात की संभावनाओं को 7.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर का निर्यात करता है, जो कुल दूध निर्यात का 23.6: है. जर्मनी 3.2 बिलियन डॉलर का निर्यात करता है, जो कुल निर्यात का 9.6 : है. संयुक्त राज्य अमेरिका 2.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर के 8.5 : निर्यात से तीसरे स्थान पर है. नीदरलैंड 2.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर के 7.1 : निर्यात से चौथे स्थान पर और फ्रांस 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर के 6 : निर्यात से पांचवे स्थान पर कायम है. कारोबारियों के संगठन कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडियाट्रेडर्स (कैट) द्वारा दिये गए आंकड़ों के मुताबिक न्यूजीलैंड अपनी घरेलू जरूरत

से14 गुनाअधिक डेयरी उत्पादों का उत्पादन करता है और अपने कुल दूध का 93 फीसदी निर्यात करता है। [4]

–: संदर्भ :–

1. स्रोतः राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड और डी. ए. एच. डी. के प्रकाशित आंकड़ें, 2020–2021।
2. स्रोतः पशुपालन और डेयरी विभाग के प्रकाशित आंकड़ें, 2020–2021।
3. स्रोतः राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड और डीएएचडी के प्रकाशित आंकड़ें, 2020–2021।
4. स्रोतः राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड और डीएएचडी के प्रकाशित आंकड़ें, 2020–2021।